संगोष्ठी में रोहतासगढ़ के इतिहास और लोक कथाओं में समाहित इसके स्थान को बताया

रांची | एक्सआईएसएस में 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन', आदिवासी साहित्य निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सोमवार को फादर माइकल वैन डेन बोगार्ट एस. जे. ऑडिटोरियम में एक्सआईएसएस के ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम के डॉ. केएस सिंह जेएनयू दिल्ली में यूएस फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता मैरी गिरार्ड के साथ मिलकर सेमिनार में आदिवासी संस्कृतियों और उनकी साहित्यिक विरासत की खोज के लिए इनकी संस्कृति और कहानी कहने के बीच जटिल संबंधों पर गहन चर्चा हुई। संस्थान के निदेशक डॉ. जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे ने सबका स्वागत किया कहा कि यह सेमिनार छात्रों को ग्रामीण और अदिवासी समुदायों के सामने अनेवाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा।

एक्सआईएसएस : आदिवासी साहित्य निर्माण पर संगोष्ठी

सेमिनार के दौरान रोहतासगढ़ के इतिहास और लोक कथाओं में समाहित इसके स्थान को बताया गया। साहित्य, शोध, कला, फिल्म निर्माण और अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने अदिवासी साहित्य का विकास, समकालीन संदर्भों में इसका अनुकूलन और सांस्कृतिक पहचान और लचीलेपन को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका चर्चा की। इनमें सिद्धो-कान्हो विश्वविद्यालय, दुमका की पूर्व कुलपति डॉ. सोना झरिया मिंज, फादर निकोलस बारला, गुंजल इकिर मुंडा, डॉ. अभय सागर मिंज, दीपक बाड़ा, सीबीसीआई नई दिल्ली के सचिव डॉ. नारायण उरांव मौजूद थे।

PRESS : DAINIK BHASKAR

आदिवासी समुदाय की विरासत को मिल रहा बढ़ावा

बोले डॉ जोसफ

एक्सआईएसएस में सोमवार को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की शुरुआत हुई।

रांची, विशेष संवाददाता। जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएस एस), रांची के डॉ केएस सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च और प्लानिंग विभाग, रूरल मैनेजमेंट विभाग की ओर से सोमवार को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुरुआत हुई।

इसका विषय 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकनः सांस्कृतिक अनुकूलन व कहानी कहने की कलाः आदिवासी साहित्य का निर्माण है'। संगोष्ठी की शुरुआत करते हुए एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर ने कहा कि एक्सआईएसएस, ओने ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च और प्लानिंग विभाग और रूरल मैनेजमेंट विभाग के माध्यम से भारत के आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और संरक्षित करने की अपनी प्रतिबद्धता पर गर्व करता है। संस्थान स्थित इस सेंटर से शैक्षणिक उत्कृष्टता को सामाजिक प्रभाव से जोड़ने के उद्देश्य को बढ़ावा मिलता है। यह देश भर में आदिवासी आबादी के अधिकारों और विकास को समझने और उनकी वकालत करने के लिए हमारे समर्पण का प्रतीक है। कहा, इस संगोष्ठी में आदिवासी साहित्य के निर्माण में योगदान देने वाले समृद्ध सांस्कृतिक अनुकूलन व कहानी कहने की परंपराओं पर चर्चा होगी, जो विद्वानों और शोधकर्ताओं को इन विषयों को गहराई से जानने के लिए एक मंच प्रदान करेगा।

जवाहरलाल नेहरू विवि, दिल्ली में शोधार्थी व यूएस फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता मैरी गिरार्ड ने कहा कि रोहतासगढ़ का फिर से दौरा करके, हमारा उद्देश्य न सिर्फ कहानी कहने की परंपराओं का सम्मान करना है, बल्कि आदिवासी साहित्य की गतिशील प्रकृति व सामूहिक पहचान को आकार देने में इसके महत्व को बताना भी है।

PRESS : HINDUSTAN

आदिवासी संस्कृति व विविधता को प्रकाश में लाना होगा : मेरी

एक्सआइएसएस

रांची. एक्सआइएसएस में सोमवार को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की शुरुआत हुई. इसका विषय रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन : सांस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कहने की कला, आदिवासी साहित्य का निर्माण था. इस पर विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किये. डॉ केएस सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एंड प्लानिंग डिपार्टमेंट और रूरल मैनेजमेंट व जेएनयू ने इसमें सहयोग किया. इस मौके पर यूएस फुलब्राइट व जेएनयू की रिसर्चर मेरी जिरार्ड बतौर अतिथि वक्ता पहुंचीं. उन्होंने कहा कि आदिवासी संस्कृति की समृद्धि और विविधता को प्रकाश में लाने की जरूरत है. रोहतासगढ़ का दौरा कर इस उद्देश्य को पूरा किया जा सकता है. इससे आदिवासी समाज के बदलाव की कहानी दोबारा लिखी जा सकेगी. इसमें समय के साथ कैसे परंपराएं बदली हैं और जीवनशैली में क्या बदलाव हुआ है, इसका आकलन किया जा सकेगा. वहीं, एक्सआइएसएस के निदेशक डॉ जोसेफ मरियानूस कुजूर एसजे ने संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज लगातार आगे बढ़ रहा है. इसके बाद भी ग्रामीण क्षेत्र के आदिवासी सामाजिक रूप से पिछड़े हुए हैं. शैक्षणिक उत्कृष्टता को सामाजिक प्रभाव से जोड़ने की जरूरत है. इससे आदिवासी समाज में सकारात्मक विकास होगा. मौके पर संस्था के डीन एकेडमिक्स डॉ अमर एरॉन तिग्गा, डॉ अनंत कुमार, डॉ संत कुमार, डॉ भुवनेश्वर सवैयां, डॉ अभय सागर मिंज, रोशन एक्का, डॉ नीलम केरकेट्टा, कीर्ति मिंज, ऑगस्टीन केरकेट्टा, मोनिका टोप्पो और पूनम टोपनो सहित अन्य मौजूद थे.

PRESS : PRABHAT KHABAR

SOCIAL NEWS SEARCH

जल्द आ रहा है आपका
नया अखबार

एक्सआईएसएस में आदिवासी साहित्य निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

यूटिलिटी

June 17, 2024 Social News Search

Leave A Comment

रांची : जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस), रांची ने अपने डॉ के.एस. सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), दिल्ली में यूएस फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता सुश्री मैरी गिरार्ड के साथ मिलकर सोमवार को संस्थान के फादर माइकल वैन डेन बोगार्ट एस.जे. ऑडिटोरियम में दो-दिवसीय 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन': सांस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कहने की कला: आदिवासी साहित्य का निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया.

यह संगोष्ठी आदिवासी संस्कृतियों और उनकी साहित्यिक विरासत की खोज में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई. क्योंकि इसने संस्कृति, अनुकूलन और कहानी कहने के बीच जटिल संबंधों पर गहन चर्चा हुई.

इस संगोष्ठी का स्वागत नोट एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे द्वारा दिया गया, जिसमें उन्होंने कार्यशाला में सभी का स्वागत किया और कहा, "एक्सआईएसएस, रांची ओने ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम के माध्यम से भारत के आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और संरक्षित करने की अपनी प्रतिबद्धता पर बहुत गर्व करता है. संस्थान में स्थित इस सेंटर से शैक्षणिक उत्कृष्टता को सामाजिक प्रभाव से जोड़ने के उद्देश्य को बढ़ावा मिलता है और देश भर में आदिवासी आबादी के अधिकारों और विकास को समझने और उनकी वकालत करने के लिए हमारे समर्पण का प्रतीक है. साथ ही हमारा रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम छात्रों को ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए व्यावहारिक कौशल और अंतर्दृष्टि से लैस करके इन प्रयासों को और आगे बढ़ाता है, यह सुनिश्चित करता है कि हमारे संस्थान से निकले हुए मैनेजर सकारात्मक बदलाव के उत्प्रेरक हों."

उन्होंने आगे कहा कि, यह सेमिनार आदिवासी साहित्य के निर्माण में योगदान देने वाले समृद्ध सांस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कहने की परंपराओं पर चर्चा करता है, जो विद्वानों और शोधकर्ताओं को इन विषयों को गहराई से जानने के लिए एक मंच प्रदान करेगा. संस्थान विद्वानों और हितधारकों को भारत के आदिवासी समुदायों के लिए अधिक न्यायसंगत और सशक्त भविष्य की दिशा में इस परिवर्तनकारी यात्रा में शामिल होने के लिए आमंत्रित करता है."

"आदिवासी संस्कृतियों की समृद्धि और विविधता का जश्न मनाने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है," ये बातें जेएनयू में रिसर्चर और यूएस फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता और कार्यक्रम की आयोजक मैरी गिरार्ड ने कहा. उन्होंने कहा, "रोहतासगढ़ का फिर से दौरा करके, हमारा उद्देश्य न केवल कहानी कहने की परंपराओं का सम्मान करना है, बल्कि आदिवासी साहित्य की गतिशील प्रकृति और सामूहिक पहचान को आकार देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालना भी है."

सेमिनार के दौरान, रोहतासगढ़ पर विस्तार से चर्चा की गई और इसे इतिहास और लोककथाओं में समाहित स्थान बताया गया. अंतःविषय दृष्टिकोण के माध्यम से, प्रतिभागियों ने आदिवासी साहित्य की गहराई में जाकर आख्यानों, मिथकों और मौखिक परंपराओं की परतों को उजागर किया, जिन्होंने भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार दिया है. सेमिनार में आदिवासी अध्ययन के क्षेत्र में प्रसिद्ध विद्वानों और शोधकर्ताओं द्वारा आकर्षक चर्चाएं और प्रस्तुतियां दी गईं. अन्वेषण के विषयों में आदिवासी साहित्य का विकास, समकालीन संदर्भों में इसका अनुकूलन और सांस्कृतिक पहचान और लचीलेपन को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका शामिल थी. पैनल के विषय थे रोहतासगढ़ का दौरा: किला और गांव, इतिहास का विरोधाभास: मौखिक बनाम अकादमिक: हमारी पद्धति का विउपनिवेशीकरण, उरांव प्रवास का इतिहास, आदिवासी प्रवास पर साहित्य का ऐतिहासिक अवलोकन छोटानागपुर, पलायन की कहानी: उरांव के नजरिए से, मौखिकता और आदिवासी पहचान और एजेंसी, तथा लोक कथाओं का संकलन: साहित्य और मौखिक अभिलेखागार.

PRESS : SOCIAL NEWS SEARCH

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

पंच संवाददाता

रांची। जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस), रांची ने अपने डॉ के.एस. सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), दिल्ली में यूएस फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता मैरी गिरार्ड के साथ मिलकर सोमवार को संस्थान के फादर माइकल वैन डेन बोगार्ट एस.जे. ऑडिटोरियम में दो-दिवसीय 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन': सांस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कहने की कलाः आदिवासी साहित्य का निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। यह संगोष्ठी आदिवासी संस्कृतियों और उनकी साहित्यिक विरासत की खोज में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई। क्योंकि इसने संस्कृति, अनुकूलन और कहानी कहने के बीच जटिल संबंधों पर गहन चर्चा हुई। इस संगोष्ठी का स्वागत नोट एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे द्वारा दिया गया, जिसमें उन्होंने कार्यशाला में सभी का स्वागत किया और कहा, एक्सआईएसएस, रांची ओने ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम के माध्यम से भारत के आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और संरक्षित करने की अपनी प्रतिबद्धता पर बहुत गर्व करता है। संस्थान में स्थित इस सेंटर से शैक्षणिक उत्कृष्टता को सामाजिक प्रभाव से जोड़ने के उद्देश्य को बढ़ावा मिलता है और देश भर में आदिवासी आबादी के अधिकारों और विकास को समझने और उनकी वकालत करने के लिए हमारे समर्पण का प्रतीक है। साथ ही हमारा रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम छात्रों को ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए व्यावहारिक कौशल और अंतर्दृष्टि से लैस करके इन प्रयासों को और आगे बढ़ाता है, यह सुनिश्चित करता है कि हमारे संस्थान से निकले हुए मैनेजर सकारात्मक बदलाव के उत्प्रेरक हों।

PRESS : PUNCH

एक्सआईएसएस में 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन' पर आदिवासी साहित्य निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

फ्रीडम फाइटर संवाददाता

रांची : जेविवर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस), रांची ने अपने डॉ के.एस. सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), दिल्ली में यूएस फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता सुश्री मैरी गिराई के साथ मिलकर सोमवार को संस्थान के फादर माइकल वैन डेन बोगार्ट एस.जे. ऑडिटोरियम में दो-दिवसीय 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन': सांस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कहने की कला: आदिवासी साहित्य का निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। यह संगोष्ठी आदिवासी संस्कृतियों और उनकी साहित्यिक विरासत की खोज में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई। क्योंकि इसने संस्कृति, अनुकूलन और कहानी कहने के बीच जटिल संबंधों पर गहन चर्चा हुई। इस संगोष्ठी का स्वागत नोट एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे द्वारा दिया गया, जिसमें उन्होंने कार्यशाला में सभी का स्वागत किया और कहा, एक्सआईएसएस, रांची ओने ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम के माध्यम से भारत के आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और संरक्षित करने की अपनी

प्रतिबद्धता पर बहुत गर्व करता है। संस्थान में स्थित इस सेंटर से शैक्षणिक उत्कृष्टता को सामाजिक प्रभाव से जोड़ने के उद्देश्य को बढ़ावा मिलता है और देश भर में आदिवासी आबादी के अधिकारों और विकास को समझने और उनकी वकालत करने के लिए हमारे समर्पण का प्रतीक है। साथ ही हमारा रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम छात्रों को ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए व्यावहारिक कौशल और अंतर्दृष्टि से लैस करके इन प्रयासों को और आगे बढ़ाता है, यह सुनिश्चित करता है कि हमारे संस्थान से निकले हुए मैनेजर सकारात्मक बदलाव के उत्प्रेरक हों। उन्होंने आगे कहा कि, यह सेमिनार आदिवासी साहित्य के निर्माण में योगदान देने वाले समृद्ध सांस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कहने की परंपराओं पर चर्चा करता है, जो विद्वानों और शोधकर्ताओं को इन विषयों को गहराई से जानने के लिए एक मंच प्रदान करेगा। संस्थान विद्वानों और हितधारकों को भारत के आदिवासी समुदायों के लिए अधिक न्यायसंगत और सशक्त भविष्य की दिशा में इस परिवर्तनकारी यात्रा में शामिल होने के लिए आमंत्रित करता है। आदिवासी संस्कृतियों की समृद्धि और विविधता का जश्न मनाने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है, वे बातें जेएनयू में रिसर्चर और यूएस फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता और कार्यक्रम की आयोजक मैरी गिराई ने कहा। उन्होंने कहा, रोहतासगढ़ का फिर से दौरा करके, हमारा उद्देश्य न केवल कहानी कहने की परंपराओं का सम्मान करना है, बल्कि आदिवासी साहित्य की गतिशील प्रकृति और सामूहिक पहचान को आकार देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालना भी है। सेमिनार के दौरान, रोहतासगढ़ पर विस्तार से चर्चा की गई और इसे इतिहास और लोककथाओं में समाहित स्थान बताया गया। अंतःविषय दृष्टिकोण के माध्यम से, प्रतिभागियों ने आदिवासी साहित्य की गहराई में जाकर आख्यानों, मिथकों और मौखिक परंपराओं की परतों को उजागर किया, जिन्होंने भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार दिया है।

PRESS : FREEDOM FIGHTER